

न्यायालय जिला कलक्टर, बांसवाड़ा (राज.)

पीठासीन अधिकारी - अंकित कुमार सिंह, IAS

जिला कलक्टर, बांसवाड़ा

प्रकरण संख्या : 02/ 2020

GCMS रजिस्ट्रेशन संख्या : 2020/41

प्रार्थी/अपीलार्थी :-

श्री मखजी पिता श्री हकरा
जाति भील निवासी लसोडिया
तहसील कुशलगढ

अप्रार्थी /रेस्पोंडेंट्स:-

1. श्री कान्तिलाल पिता थावरा जाति भील निवासी लसोडिया तहसील कुशलगढ जिला बांसवाड़ा
2. श्री कालुराम पिता थावरा जाति भील निवासी लसोडिया तहसील कुशलगढ जिला बांसवाड़ा
3. श्री मलु पिता थावरा जाति भील निवासी लसोडिया तहसील कुशलगढ जिला बांसवाड़ा
4. श्रीमती काली पुत्री थावरा जाति भील निवासी मोतिया तहसील कुशलगढ जिला बांसवाड़ा
5. श्रीमती कंकु पुत्री थावरा जाति भील निवासी सिमेडा तहसील कुशलगढ जिला बांसवाड़ा
6. श्रीमती संतु पुत्री थावरा (पत्नि प्रभु) जाति भील निवासी माण्डली तहसील कुशलगढ जिला बांसवाड़ा
7. श्री गोबरीया पिता स्व. भोगजी जाति भील निवासी जानामेडी तहसील व जिला बांसवाड़ा
8. तहसीलदार कुशलगढ हाल तहसील सज्जनगढ उपस्थित

बनाम

श्री तसीलीम अहमद, एडवोकेट

श्री समर पण्ड्या एडवोकेट
तहसीलदार तहसील सज्जनगढ


निर्णय

अपील अन्तर्गत धारा 75 भू-राजस्व अधिनियम

दिनांक :- 29.09.2021

प्रस्तुत मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि ग्राम सभ लसोडिया पटवार क्षेत्र राठ धनराज तहसील कुशलगढ हाल सज्जनगढ के खाता सं.38 नया व 39 पुराना खसरा नं.91, 92, 93, 94, 95, 97, 99, 100, 146, 147, 150, 151, 152, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 206, 210, 211, 230, 231, 235, 446, 507/1, 510/181, 554/160, 555/169 कुल खेत 30 कुल रकबा 54.05 बिघा जिसका रजिस्टर्ड वसीयतनामा वरसंग द्वारा अपीलांत मखजी व स्व.ताजुडी के नाम दिनांक 31.01.1990 को पंजीबद्ध किया गया था। अपीलांत अनुसार उक्त रजिस्टर्ड वसीयतनामा को



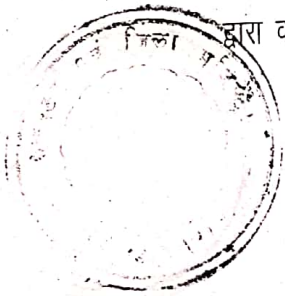

जिला कलक्टर
बांसवाड़ा (राज.)

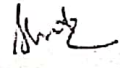
नजरदांज कर एवं कानून की अनदेखी कर दिनांक 04.10.1993 को नामान्तरकरण सं. 343 तात्कालिक तहसीलदार कुशलगढ द्वारा वरसंग की दो पुत्रीयों स्व. धीरा व स्व. ताजुडी के नाम विधि विरुद्ध खोला गया जिसमें दोनो पुत्रीयों की मृत्यु हो चुकी है जिस कारण नामान्तरकरण के बाद खाते में वर्तमान में रेस्पोंडेंट सं. 1 से 6 का नाम दर्ज रेकार्ड है, जो अवैधानिक होकर कायिल निरस्त है। नामान्तरकरण सं. 343 दिनांक 04.10.1993 तहसीलदार कुशलगढ हाल सज्जनगढ के विरुद्ध यह अपील प्रस्तुत हुई है। प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 5 लिमिटेशन एक्ट संलग्न है।

प्रकरण दर्ज रजिस्टर किया जाकर रेस्पोंडेण्ट्स को समन जारी किये गए। जिसमें अप्रार्थी सं. 1 व 2 की ओर से श्री समर पण्ड्या एडवोकेट का अभिभाषक पत्र प्रस्तुत हुआ। दिनांक 04.01.2021 को अप्रार्थी सं. 1 व 2 की ओर से जरिये अधिवक्ता जवाब प्रस्तुत हुआ, जिसमें कथन किया कि अपीलांत व प्रत्यर्थागण एक परिवार के नहीं है। मूल खाता वरसंग पिता लिमजी के नाम से था तथा मृत्यु के पश्चात् वरसंग के कोई पुत्र संतान नहीं होने से दो जीवित पुत्रीयों धीरा, ताजुडी पिता वरसंग के नाम सयुक्त रूप से खाते में जरिये नामान्तरकरण सं. 343 दिनांक 04.10.1993 से दर्ज हुआ तथा तभी से ताजुडी का परिवार उक्त वर्णित भूमि पर काबीज होकर उपयोग व उपभोग कर रहे हैं एवं मौके पर निवास कर रहे हैं। अपीलांत का सम्पत्ति पर कोई कब्जा नहीं है। उक्त प्रकरण में वादग्रस्त सम्पत्ति में प्रत्यर्थी सं. 1 से 6 का बंटवारा होकर उसका भी नामान्तरकरण हो चुका है। उक्त वसीयत फर्जी एवं कुट्टरचित है जिसके आधार पर 30 वर्ष पश्चात् विधिवत किये गये नामान्तरकरण को निरस्त नहीं किया जा सकता है। अतः अपीलांत द्वारा प्रस्तुत अपील को खरीज करने निवेदन किया।

अप्रार्थी सं. 3 से 7 बावजुद नोटिस तामील अनुपस्थित रहने पर दिनांक 10.03.2021 को उनके विरुद्ध एक पक्षीय कार्यवाही के आदेश दिये गये। दिनांक 13.08.2021 को तहसीलदार सज्जनगढ की ओर से जवाब प्राप्त हुआ जिसमें कथन किया गया कि नामान्तरकरण सं. 343 खातेदार की मृत्यु उपरान्त हिन्दु उत्तराधिकारी अधिनियम अनुसार खोला गया है।

दिनांक 15.09.2021 को उपस्थित प्रार्थी अधिवक्ता तथा अप्रार्थी सं.1, 2 के अधिवक्ता व अप्रार्थी सं. 8 की ओर से प्रस्तुत बहस सुनी गई। अपीलांत द्वारा अपील में प्रस्तुत तथ्यों को दोहराते हुए बहस में कथन किया गया कि ग्राम लसोडिया पटवार क्षेत्र राठ धनराज तहसील कुशलगढ हाल सज्जनगढ के खाता सं.38 नया व 39 पुराना खसरा नं.91, 92, 93, 94, 95, 97, 99, 100, 146, 147, 150, 151, 152, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 206, 210, 211, 230, 231, 235, 446, 507/1, 510/181, 554/160, 555/169 कुल खेत 30 कुल रकबा 54.05 बिघा जिसका रजिस्टर्ड वसीयतनामा वरसंग द्वारा अपीलांत मखजी व स्व.ताजुडी के नाम दिनांक 31.01.1990 को पंजीबद्ध किया गया था। अपीलांत अनुसार उक्त रजिस्टर्ड वसीयतनामा को नजरदांज कर एवं कानून की अनदेखी कर दिनांक 04.10.1993 को नामान्तरकरण सं. 343 तात्कालिक तहसीलदार कुशलगढ द्वारा वरसंग की दो पुत्रीयों स्व. धीरा व स्व. ताजुडी के नाम विधि विरुद्ध खोला गया जिसमें दोनो




जिला कलेक्टर
बांसवाड़ा (राज.)

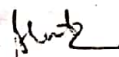
पुत्रीयों की मृत्यु हो चुकी है। वर्तमान खाता नम्बरान 42 व 44 के सम्पूर्ण खेतों पर अपीलान्त सयुक्त रूप से कब्जा है। उक्त भूमि को कृषि योग्य बनाने में करीबन 50,000/- रुपया खर्च किये हैं एवं लगातार खर्चा करता आ रहा है। मौके पर कब्जा एवं पंजीकृत वसीयतनामा होने के बावजूद अपीलान्त की जानकारी के बिना at the back of the party नामान्तरकरण धीरा व ताजुडी के नाम खोला जो अवैधानिक होकर काबिल निरस्त है। उक्त नामान्तरकरण का इल्म नकल दिनांक 14.07.2020 को प्राप्त करने से हुआ। अपीलान्त सुदुर ग्रामिण क्षेत्र एस.टी का सदस्य होने से एवं कानून पेचिदगीयों की जानकारी नही होने से अपील में देरी हुई है जो वास्तविक, सद्भावनापूर्ण व न्यायोचित है।

अप्रार्थी सं. 1 व 2 के अधिवक्ता की ओर से बहस में कथन किया कि मूल खाता वरसंग पिता लिमजी के नाम से था तथा मृत्यु के पश्चात् वरसंग के कोई पुत्र संतान नही होने से दो जीवित पुत्रीयों धीरा, ताजुडी पिता वरसंग के नाम सयुक्त रूप से खाते में जरिये नामान्तरकरण सं. 343 दिनांक 04.10.1993 से दर्ज हुआ तथा तभी से ताजुडी का परिवार उक्त वर्णित भूमि पर काबीज होकर उपयोग व उपभोग कर रहे हैं एवं मौके पर निवास कर रहे हैं। अपीलान्त का सम्पत्ति पर कोई कब्जा नही है। उक्त प्रकरण में वादग्रस्त सम्पत्ति में प्रत्यर्थी सं. 1 से 6 का बंटवारा होकर उसका भी नामान्तरकरण हो चुका है। अपीलान्त वादग्रस्त सम्पत्ति की वसीयत 30 वर्ष से भी अधिक समय होने के बावजूद कभी मौके पर उपस्थित नही हुआ और न ही उक्त वसीयत को सक्षम अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया। उक्त वसीयत फर्जी एवं कुटरचित है। जिसके आधार पर 30 वर्ष पश्चात् विधिवत किये गये नामान्तरकरण को निरस्त नही किया जा सकता है। अतः अपीलान्त द्वारा प्रस्तुत अपील को खरीज करने निवेदन किया।

जहां तक अपील म्याद बाहर होने का प्रश्न है। दोनो पक्षों की बहस सुनने के पश्चात् हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि प्रकरण का निस्तारण गुणावगुण के आधार पर होना चाहिये। लिहाजा अपीलान्त का प्रार्थना-पत्र अन्तर्गत धारा 5 म्याद अधिनियम स्वीकार कर विलम्ब को क्षम्य करते हुए अपील अन्दर म्याद समाहित करने के आदेश दिये जाते हैं।

अपील का निस्तारण गुणावगुण के आधार पर करने के विनिश्चय के पश्चात् उभयपक्षीय बहस पर मनन किया एवं पत्रावली में उपलब्ध अभिलेखों का गहनतापूर्वक अवलोकन किया। जहाँ तक वसीयत फर्जी एवं कुट रचित होने का प्रश्न है, जिस पर निर्णय करना इस न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में नही आता है। मूल खातेदार श्री वरसंग द्वारा अपने जीवनकाल में अपीलान्त मखजी व स्व.ताजुडी के नाम दिनांक 31.01.1990 को रजिस्टर्ड वसीयतनामा पंजीबद्ध किया गया था। किन्तु मूल खातेदार वरसंग की मृत्यु के पश्चात् तत्समय उक्त रजिस्टर्ड वसीयतनामा प्रस्तुत नही करने से नामान्तरकरण सं. 343 दिनांक 04.10.1993 तात्कालिक तहसीलदार कुशलगढ द्वारा वरसंग की दो पुत्रीयों स्व. धीरा व स्व. ताजुडी के नाम विरासत के आधार पर खोला गया है। जबकि मूल खातेदार वरसंग ने अपने जीवनकाल में ही दिनांक 31.01.1990 को जरिये रजिस्टर्ड




जिला न्यायालय
बांसवाड़ा (राज.)

वसीयत पत्र ग्राम लसोडिया पटवार क्षेत्र राठ धनराज तहसील कुशलगढ हाल सज्जनगढ के खाता सं.38 नया व 39 पुराना खसरा नं.91, 92, 93, 94, 95, 97, 99, 100, 146, 147, 150, 151, 152, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 206, 210, 211, 230, 231, 235, 446, 507/1, 510/181, 554/160, 555/169 कुल खेत 30 कुल कृषि भूमि रकबा 54.05 बिघा मखजी पिता हकरा व ताजुडी पुत्री वरसेंग को दे दी थी। इस कारण वरसेंग की मृत्यु के पश्चात् उक्त कृषि भूमि मखजी व ताजुडी के नाम वसीयत पत्र के आधार पर दर्ज होनी थी।

अतः अपील अपीलांत आंशिक स्वीकार की जाती है। तहसीलदार तहसील कुशलगढ द्वारा स्वीकृत नामान्तकरण संख्या 343 दिनांक 04.10.1993 निरस्त किया जाता है। तहसीलदार सज्जनगढ को पंजीकृत वसीयत पत्र दिनांक 31.01.1990 की प्रमाणिकता सुनिश्चित कर एवं पक्षकारों की सुनवाई करते हुए नियमानुसार निर्णय करने आदेशित किया जाता है।
निर्णय आज दिनांक 29.09.2021 को खुले न्यायालय सुनाया गया।



(अंकित कुमार सिंह)
जिला कलेक्टर
बिकानेर (राज.)